# राजनीति दर्शन की प्रासंगिकता : एक विमर्श

राजनीति दर्शन दर्शनशास्त्र का एक शाखा है। राजनीति का दार्शनिक विधि से अध्ययन हीं राजनीति दर्शन है। राजनीतिदर्शन के स्वरूप को सही रूप में समझने के लिए तीन पदबन्धें को समझना आवश्यक है–(क) राजनीति क्या है? (ख) दर्शन क्या है? (ग) राजनीति दर्शन क्या है?

इन पदबन्धों पर विचार कर लेने के उपरान्त राजनीति दर्शन की आधुनिकयूगीन प्रासंगिकता का प्रश्न उपस्थित होता है, जिस पर विचार अपेक्षित है।

राजनीति क्या है?

अरस्तु के युग से आधुनिक युग तक राजनीति को परिभाषित करने के अनेकानेक प्रयास किये हैं। इस अनवरत प्रयास का परिणाम उत्साहवर्द्धक नहीं रहा। हम आज भी राजनीति के बारे में क्या कहे और क्या नहीं, निश्चित रूप से कहने की स्थिति में नहीं। राजनीति के सम्बन्ध में इस प्रकार की अनिश्चितता की स्थिति के लिए अनेक तत्व उत्तरदायी है। व्यापक अर्थ में राजनीति एक क्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति जिन सामान्य नियमें के अन्दर रहता है, उनका निर्माण करता है, संरक्षित करता है और आवश्यकतानुसार इनमें संशोधन भी करता है। हम कह सकते है कि राजनीति, द्वन्द्व और सहयोग जैसे परिघटनाओं से युक्त है। एक ओर व्यक्ति जिन नियमों के अधीन निवासित है तो दूसरी ओर व्यक्ति यह भी महसूस करता है कि वह जिन सामान्य नियमों के अधीन निवासित है, उन्हें बनाये रखने के लिए अन्यों के साथ अन्तरक्रिया अपरिहार्य है। इसीलिए ऐसा माना जाता है कि राजनीति का हदय द्वन्द्व समाहार की प्रक्रिया है, जिसमें विरोधी मतों और हितों का परस्पर सामंजस्य किया जाता है। "राजनीति को इस व्यापक अर्थ में द्वन्द्व समाहार की ओर एक उपागम के अतिरिक्त और कुछ नहीं माना जा सकता क्योकि यह राजनीति की एक उपलब्धि के रूप में स्वीकार्य नहीं क्योंकि प्रत्येक द्वन्द्व का समाहार संभव नहीं फिर भी हमारे बीच जो उपस्थित विषमता और विरलता है वह इस बात का अनिवार्य संकेत है कि राजनीति मानव अवस्था की अपरिहार्य विशेषता है।

Scanned with CamScanner

राजनीति को परिभाषित करने का कोई भी प्रयास दो मुख्य समस्याओं की ओर केन्द्रित होना चाहिए। राजनीति एक ऐसा पदबन्ध है जिसका प्रयोग प्रत्येक भाषा में किया जाता है। दूसरे शब्दों में राजनीति एक अतिसामान्य पदबन्ध है। अधिकांश व्यक्ति अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल और प्राणी विज्ञान जैसे विषयों को एक अध्ययन विषय मानते हैं पर राजनीति को किसी पूर्वधारणा के संभव नहीं मानते। अधिकांश व्यक्तियों की मान्यता है कि राजनीति के विधार्थी और शिक्षक किसी न किसी रूप में अपने विषय के प्रति पूर्वाग्रहों ग्रसित होते है, जो इस विषय के निष्पक्ष उपागम को कठिन बना देता है। स्थित और भी विकट हो जाता है जब हम पाते है कि राजनीति को एक घृर्णित पदबन्ध भी माना जाता है जो अशांति, अव्यवस्था और हिंसा को निमंत्रण देता है। यह कपट, षड्यन्त्र और मिथ्याचारिता को भी प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार की धारण नई नहीं है। राजनीति जिन उद्देश्यों को लेकर चलता है, उसमें विचलन परिस्पष्ट है और यह विचलन एक गलत दिशा की ओर हो चूका है। हमारे चाहने या न चाहने से इस पवृति में अन्तर नहीं पड़ने वाला। हमारे लिए समस्या यह है कि इसे कुप्रवृतियों से बचाते हुए राजनीति को किस प्रकार देखा जाय, जो मानव समुदाय के लिए हितकर हो। 1775 में सैम्युआम जानसन ने राजनीति को विश्व में उत्थान का एक साधन मानते हुए अस्वीकार किया था। अरस्तु ने कहा था कि मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है। उनका यह कथन सत्य प्रतीत होता है। समाज में रहते हुए हम व्यक्तियों से परस्पर अन्तरक्रिया के द्वारा ही राजनीति व्यक्त होता है। व्यक्तियों के बीच परस्पर सहमति अैर असहमति राजनीति से प्रेरित होता है। राजनीति एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया है जो समाजिक जीवन के अनेक स्तरों पर गतिशील रहती है। अधिकांश लोग यह मान लेते हैं कि राजनीति में सार्वजनिक सभाऐं, जलसे, जुलुस, नारेबाजी, प्रदर्शन, माँगे, हडताल, आंसू गैस और लाठी चार्ज जैसी गतिविधियाँ भी आती है। चुनाव के समय हमें देखने को मिलता है कि राजनीतिक मंच से नेताओं द्वारा झूठे वायदे और मिथ्या प्रचार खुलकर किया जाता है। इसी कारण राजनीति को कभी-कभी धूर्तों का अंतिम आश्रय कहकर निंदा की जाती है। अर्नेस्ट बैन ने राजनीति पर व्यंग्य करते हुए इसे ऐसी कला माना जिसमें पहले तो मुसीबत को ढूँढते हैं, फिर वह कहीं हो या न हो, वहाँ उसे पकड़ लाते हैं, उसका गलत निदान किया जाता है, फिर उसके लिए गलत उपचार का प्रयोग किया जाता है।



Scanned with CamScanner

आज राजनीति इतना घृणा का पात्र बन गया है कि आम व्यक्ति इसके प्रति बिल्कुल उदासीन होता जा रहा है और बुद्धिजीवियों और न्यायधीशों से राजनीति से दूर रहने की अपेक्षा की जाती है। राजनीति को परिभाषित करते समय इन प्रवृतियों से हमें बचना होगा। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि राजनीति पर आरोपित इन निदाओं से राजनीति को बचाया जाय क्योंकि यह हमारे जीवन के हरेक पहलू को प्रभावित करता है। राजनीति गलत लोगों के हाथ में चली जाएगी और सार्वजनिक समस्याओं का समाधान संभव नहीं होगा। राजनीति आज गलत दिशा की ओर चल पड़ा है जिसे रोकना होगा और इसे समाज कल्याण की ओर अनुदेशित करना होगा।

राजनीति को परिभाषित करने में एक अन्य कठिनाई है, इसके प्रति विद्वानों का मतभेद "राजनीति को शक्ति का प्रयोग प्राधिकार का प्रयोग, सामूहिक निर्णय लेना, उपलब्ध श्रोतों का वितरण, कपटता का अभाव इत्यादि माना गया है। इनमें से कौन उपयुक्त है और कौन नहीं इसका निर्णय कठिन है। ऐसा लगता है कि राजनीति का एक सर्वसम्मत संभावित परिभाषा यह हो सकता है कि यह सामान्य नियमों का निर्माण, संरक्षण और संशोधन की ओर एक प्रयास है। इस परिभाषा में सभी को समाहित किया जाना शायद संभव नहीं पर अधिकांश मतों को इसके परिधि में लाया जा सकता है। अतः राजनीति को मूलतः एक विवादास्पद पदबन्ध माना जा सकता है जिसके एक से अधिक वैध और मान्य परिभाषायें हैं जिसके एक से अधिक वैध और मान्य अर्थ हैं। राजनीति क्या है? एक महत्वपूर्ण चर्चा का विषय हो जाता है क्योंकि यह इस विषय के सम्बन्ध में कुछ गहनतम बौद्धिक और विचारात्मक मतभेदों को उद्घाटित करता है।"[2]

इस प्रसंग में एक अंतिम परेशानी राजनीति और राजनीति विज्ञान के पर्यायवाची रूप में प्रयोग के कारण उत्पन्न होता है तथापि दोनों के बीच एक विभाजक रेखा का खींचा जाना संभव है। अपने व्यवहारिक रूप में राजनीति–राजनीति विज्ञान का भाव संप्रेषित करती है। इस प्रसंग में गार्नर का यह विचार उल्लेखनीय है कि "राजनीति शब्द का प्रयोग उन गतिविधियों के वर्णन के लिए किया जाता है जिसके द्वारा सार्वजनिक अधिकारियों का चयन किया जाता है तथा राजनीतिक नीतियों को प्रोत्साहित किया जाता है, अथवा उन गतिविधियों के योग से है जिनका संबंध वास्तविक प्रशासन से है, जबकि राजनीति विज्ञान का प्रयोग राज्य के परिवेश से संबंधित ज्ञान के समूह का



Scanned with CamScanner

वर्णन करने के लिए किया जाता है।"[3] दूसरे विज्ञान राज्य के विभिन्न रूपों में ज्ञान का संग्रह है, राजनीति का संबंध राजनीतिक व्यवस्था के वास्तविक परिचालन से है। राजनीति राजमर्मज्ञता और कूटनीति से संबंधित है, अतः यह कला है। परन्तु राजनीति विज्ञान का संबंध राज्य और सरकार के मौलिक सिद्धातों से है अतः यह अधिक मात्रा में विज्ञान है।

दर्शन क्या है?

"सामान्य अर्थ में दर्शन बुद्धि का विज्ञान है। प्लेटो और अरस्तु इसे सत्य की खोज मानते है। इसका क्षेत्र इतना व्यापक है कि यह किसी वस्तु की व्याख्या न कर वस्तु की सामान्य व्याख्या करने का प्रयास करता है। यह अपने परिधि में किसी भी ज्ञान को बाहर नहीं रहने देना चाहता। अपने व्याख्या के क्रम में यह सम्पूर्ण ब्रह्मंड, वृहत विश्व और लघु जगत, सभी को सम्मिलित करता है। दर्शन की व्यापकता इतनी अधिक है कि प्रत्येक अध्ययन विषय को प्रत्यक्ष या अपत्यक्ष रूप में किसी न किसी रूप में प्रभावित अवश्य करता है। दर्शन न सिर्फ 'है' का परीक्षण करता है बल्कि यह भी देखने का प्रयास करता है कि उसे किस रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। यह मात्र भौतिक जगत तक सीमित नहीं, बल्कि दार्शनिक प्रश्नों के बारे में भी विवेचन कर सकता है। यह न तो किसी पूर्वस्थापित वैज्ञानिक प्रकिया के नियमों और न हीं सही प्रमाण की आवश्यकता से सीमित है बल्कि इसके अन्तर्गत प्रेक्षण, योग्य परिक्षणों से परे कल्पना लोक भी आ जाता है।"[4] हैलोवेल का यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि दर्शन अर्थ की तलाश है, वह हमारे ज्ञान को कुछ विवेकशील व सार्थक प्रतिमानों में संश्लिश्ट करने का प्रयास करता है।"[5]

दर्शन का वास्तविक उद्देश्य हमारे ज्ञान मे समृद्धि मात्र नहीं बल्कि उसे गहनता प्रदान करना भी है। जब इसे राजनीतिक घटनाओं के अध्ययन पर आरोपित किया जाता है तो यह राजनीति दर्शन बन जाता है। यह सच है। कि दर्शन की चार मुख्य शाखाएँ हैं – तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र और आचारशास्त्र। राजनीति दर्शन इन चारों शाखाओं से जुड़ा हुआ है, यद्यपि इसका आध्यात्म (हीगल) और आचारशास्त्र (प्लेटों, अरस्तु) के साथ अति निकट का संबंध रखता है। हैलोवेल के शब्दों में राजनीति दर्शन का एक प्रमुख कार्य यह है कि वह मानव के विश्वसों को आत्म–सजगता में लाये और तर्क और बुद्धि के आधार पर इसकी समीक्षा करे। राजनीति सिद्धांत के



Scanned with CamScanner

तीन मुख्य कृत्य स्वीकार किये जाते हैं। (क) वर्णन (ख) समालोचना (ग) पुर्ननिर्माण। इनमें वर्णन का कृत्य राजनीति विज्ञान के अन्दर आता है, समालोचना और पुर्ननिर्माण राजनीति दर्शन के अन्तर्गत आता है। इस प्रकार राजनीति सिद्धांत के दो मुख्य अंग माने जा सकते है – राजनीतिदर्शन को यदि इस आधार पर अवस्थित होना है तो उसे राजनीतिक सिद्धांतों की गहन समक्ष होनी चाहिए। इतिहास में जो भी सफल राजनीति दार्शनिक हुए है उनकी राजनीति सिद्धांत में गहरी पैठ रही है और इसी के आधार पर उन्होंने विभिन्न मतों का परिणयन किया है। यह कहा जा सकता है कि राजनीति सिद्धांतकार एक तरफ सिद्धांतकार तो है ही साथ–साथ राजनीति दार्शनिक भी है। कुछ विचारकों ने इनमें से एक पक्ष को राजनीति सिद्धांत का सारतत्व माना है तो कुछ विचारकों ने इनमें से एक पक्ष को राजनीति सिद्धांत का सारतत्व माना है तो कुछ विचारकों ने दूसरे को अधिक मान्यता दी है। पर गहराई से देखने पर पता लगता है कि राजनीति का सम्पूर्ण ज्ञान विकसित करने में ये दोनों तत्व परस्पर भूमिका निभाते है।

राजनीति दर्शन क्या है?

राजनीति विज्ञान और राजनीति दर्शन में अन्तर की चर्चा करते हुए कहा जा सकता है कि राजनीति विज्ञान का सम्बन्ध यथार्थ या तथ्यों से होता है, जबकि राजनीति दर्शन का सम्बन्ध आदर्शों, मानकों और मूल्यों से होता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि राजनीति विज्ञान यह निर्धारित करता है कि ऐसी स्थिति में मनुष्य क्या करता है और उसे क्या क्या करना चाहिए? उदाहरण के लिए प्लेटो ने अपने युग की राजनीति की त्रुटियों का विवरण देने के बाद न्याय की स्थापना के लिए आदर्श राज्य व्यवस्था का निरूपन के लिए आदर्श राज्य व्यवस्था का निरूंपन किया था। इस तरह राजनीतिदर्शन के अन्तर्गत हम तथ्यों का निरीक्षण करने के उपरान्त शुभ और अशुभ उचित और अनुचित के सम्बंध में अपने विवेक का प्रयोग करते हुए वस्तुस्थित की समालोचना करते है और आदर्श के अनुरूप ढ़ालने के लिए नई व्यवस्था के निर्माण का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। अतः राजनीति दर्शन का सम्बंध तथ्यों और मूल्यों दोनों से है। इन दोनों का एक साथ निर्वाह करना सचमूच कठिन है। परम्परात दार्शनिक तथ्यों के अन्वेशण के प्रति अति सजग नहीं रहे हैं, क्योंकि इसके लिए उनके पास उपयुक्त उपकरण उपलब्ध नहीं थे। उनकी रचनाओं में तथ्यों के विवरण के साथ अनके काल्पनिक चर्चाओं का समावेश



Scanned with CamScanner

06

देखा जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनीति दर्शन के अन्तर्गत अनेक मान्यताएँ और व्याख्याएँ एक साथ प्रचलित रह सकती है। हम कह सकते है कि राजनीति दर्शन का सम्बंध मानव जीवन की आवश्यकताओं लक्ष्यों और उद्देश्यों से होता है जिसका वैज्ञानिक रूप से निर्धारण सम्भव नहीं। पर इन समस्याओं पर सही समझ वाले व्यक्तियों के बीच उपलब्ध सामग्री और तर्क के आधार पर विमर्श किया जाना संभव है। इन प्रकार के विमर्श के उपरान्त हमारी वर्तमान चेतना के स्तर पर कुछ सर्वमान्य बिन्दुओं की ओर उपागम संभव है। इस तर्कों को आगे के पर्यवेक्षण के लिए राजनीतिक चिन्तन के दीर्घ परम्परा से चूना जा सकता है। नये तर्कों को उपस्थित कर ज्ञान के बढ़ते हुए परिधि के आधार पर निष्कर्ष स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार मूल्यों के लिए अन्वेषण और हमारी स्थिति का समीक्षात्मक पूर्नविचार एक अनवरत प्रक्रिया है जो राजनीति दर्शन को निरन्तरता का औचित्य प्रदान करता है। राजनीति दर्शन का उद्भव राजनीतिक क्रिया के समीक्षात्मक अनुचिन्तन से हुआ है जो इसके उद्भव के बहुत पूर्व से उपस्थित रहा है। जब सामान्य प्रचलन में प्रयुक्त पदबन्धों का प्रयोग राजनीतिक विमर्श में किया है तो इसका अर्थ विद्वानों द्वारा भिन्न विचारों के रूप में किया जा सकता है राजनीति दर्शन इनका सही अर्थ निर्धारण की ओर प्रयास करता है जो विभिन्न मतों के विद्वानों को मान्य हो। राजनीति विमर्श के क्रम में प्रयुक्त तर्क अनिवार्य रूप से यह नहीं बतलाते कि वे सभी एक दूसरे के मतों से सहमत हैं। शेल्डन एस० वोर्लिन का कहना है कि यह प्रवृति व्यापक रूप से पायी जाती है कि राजनीतिक विषयों की चर्चा करते समय जिन शब्दों और धारणाओं का प्रयोग किया जाता है वह राजनीतिक घटनाओं के विवरण देते समय हम उन्हीं शब्दों और धारणाओं का प्रयोग करते है। प्राकृतिक विज्ञान की शब्दाबली को सीमित तकनीकि के संदर्भ में प्रयुक्त की जाती है, इसके विपरीत प्रचलित सामाजिक और राजनीतिक चर्चाओं में 'पिता की सत्ता' 'चर्च की संज्ञा' या संसद की संज्ञा जैसे पदों का सामानांतर प्रयोग खुलेआम किया जाता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि राजनीति विमर्श के अन्तर्गत जब किसी संकल्पना का प्रयोग सामान्य भाषा के रूप में किया जाता है तो उसका निश्चित परिभाषित अर्थ की अनिवर्यता महसूस की जाती है। राजनीति दर्शन इस अर्थ को स्थिर और स्पश्ट करने में विशेष सहायता प्रदान करता है। पूनश्चः कुछ शब्द ऐसे



Scanned with CamScanner

किसी एक युग का दार्शनिक एक अर्थ में प्रयुक्त करता है, पर दूसरे का दार्शनिक अपने सिद्धांत के निरूपण के लिए उन्हें शब्दों का प्रयोग अर्थ में करता है। उदाहरणार्थ, प्लेटो और अरस्तु ने जहाँ–जहाँ राज्य का प्रयोग किया है, वहाँ उनका तात्पर्य नगर राज्य से रहा है। आज राष्ट्र-राज्य को ध्यान में रखकर राज्य शब्द का प्रयोग करते है। रैफेल मानना है कि अवधारणाओं के स्पष्टीकरण के अन्तर्गत विश्लेशण और परिमार्जन सम्मिलित है। विश्लेषण का अर्थ है उनके तत्वों का बतलाना और परिभाषा देकर समझाना। जैसे 'संप्रभुता' का अर्थ है एक अवधारणा और किसी अन्य अवधारणा के बीच तार्किक सम्बंध को बतलाना। अगर राज्य को कानून बनाने का अधिकार है तो 'नागरिकों' का दायित्व है वे उसका पालन करें।

रैफेल के अनुसार अवधारणा में परिभार्जन का अर्थ है ऐसी परिभाषा का सुझाव देना जा स्पष्टता और सामंजस्य प्राप्ति में सहायक हो। उदाहरणर्थ धर्म निरपेक्षता का अर्थ धर्म से स्वतंत्र या जिसका संबंध इस लोक से हो या जिसका संबंध धर्म या अध्यात्म से नहीं ही लिया जाता है, पर भारत में इस पद का प्रयोग सर्वधर्म समभाव से लिया जाता है। ऐसी स्थिति में धर्म निरपेक्षता पद को लेकर कुछ भ्रम उत्पन्न होते हैं। ऐसे में स्पष्टता की दृष्टि से यह उचित होगा कि इस पद का प्रयोग प्रसंग सापेक्ष हो। जो लोग सर्वध र्म समभाव में विश्वास करते है वे 'सर्वधर्म' समभाव पद का प्रयोग करे क्योंकि धर्म निरपेक्षता और सर्वधर्म समभाव पर्यायवाची पद नहीं है।

अन्त में राजनीति दर्शन की आधुनिक यूगीन प्रासंगिकता का प्रश्न उपस्थित होता है। यह प्रश्न इसलिए उपस्थित होता है क्योंकि अधिकांश विचारकों का यह अभिमत रहा है कि राजनीति दर्शन का उद्भव जिन परिस्थितियों में हुआ था, वह अब बदल चूका है। बदली हुई परिस्थिति में नवीन राजनीति दर्शन का आवश्यक्ता महसूस की जाती है। यह तर्क युक्तियुक्त नहीं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि प्राचीन राजनीति दर्शन का सम्बंध तथ्ययूगीन राजनीति से था। पर उसके अन्तर्गत मनुष्य और समाज के सम्बंध में चिरतन सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। ऐसी समस्याएं उपस्थित की गयी है जो देश और काल की सीमा से परे है। इस प्रकार का चिंतन ऐतिहासिक परिस्थितियों से उत्पन्न अवश्य होता है पर यह सर्वजीवन और सर्व कालिक चर्चा का विषय बन जाता है। प्लेटो दार्शनिक

सम्राट की कल्पना जिन परिस्थितियों में की थी वे आज नहीं पर मेरे दृष्टि से यह विचार आज पहले की अपेक्षा ज्यादा प्रासंगिक है इसलिए राजनीति दर्शन एक धारा है जिसके प्रवाह को अवरूद्ध नही किया जा सकता। सब प्रकार के विरोधों के उपरान्त भी यह अपने प्रगति को बनाये रखेगा।

Scanned with CamScanner